University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

समकालीन भारतीय दर्शन केवल प्राचीन भारतीय दर्शन की पुनरावृत्ती तथा पाश्चात्य दर्शन की अनुकृती मात्र नहीं हैं ।

डा. अर्चना कुमारी

दर्शनशास्त्र, बी. आर. अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपूर, (बिहार) भारत

सार संक्षेप

जैसा की सर्व विदित हैं भारतीय दर्शन के विकास में सूत्र-युग के पश्चात भाष्यकारों और विद्वानोंका युग आता है । स्वाभाविक रूप से सूत्र के संक्षिप्त होणे के कारण उन्हे विवेचन और व्याख्या करणे की आवश्यकता थी। इसलिए सूत्र-युग के पश्यात इस युग का प्रारंभ बतलाया जाता है और यह माना जाता है कि यह युग १६ वी – १७ वी शताब्दी तक चलता है । इस युग में हम अनेक विद्वानो और दार्शनिकोंको देखते हैं । जिन्होने अपने विद्वतापूर्ण रचनाओ या 'भाष्य और उपभाष्य' के द्वारां भारतीय दर्शन के इतिहास को विकसित किया हैं । यहाँ अधिक विस्तृत विवेचन नही करके केवल शंकर, रामानुज, माधव, वल्लभ, निम्बार्क, प्रभाकर, कुमारील, वाचस्पति, विज्ञानभिक्षु, श्रीधर, उदयन, ईश्वरकृष्ण, अन्नम, भट्ट, आदि का नाम लिया जा सकता हैं ।

मुख्य शब्दः– भारतीय दर्शन, प्राचीन भारतीय दर्शन, पाश्चात्य दर्शन, अनुकृती

जैसा की सर्व विदित हैं भारतीय दर्शन के विकास में सूत्र-युग के पश्चात भाष्यकारों और विद्वानोंका युग आता है। स्वाभाविक रूप से सूत्र के संक्षिप्त होणे के कारण उन्हे विवेचन और व्याख्या करणे की आवश्यकता थी। इसलिए सूत्र-युग के पश्यात इस युग का प्रारंभ बतलाया जाता है और यह माना जाता है कि यह युग १६ वी – १७ वी शताब्दी तक चलता है । इस युग में हम अनेक विद्वानो और दार्शनिकोंको देखते हैं । जिन्होने अपने विद्वतापूर्ण रचनाओ या 'भाष्य और उपभाष्य' के द्वारां भारतीय दर्शन के इतिहास को विकसित किया हैं । यहाँ अधिक विस्तृत विवेचन नही करके केवल शंकर, रामानुज, माधव, वल्लभ, निम्बार्क, प्रभाकर, कुमारील, वाचस्पति, विज्ञानभिक्षु, श्रीधर, उदयन, ईश्वरकृष्ण, अन्नम, भट्ट, आदि का नाम लिया जा सकता हैं । इन लोगोने अपने विदवत्तापूर्ण कृतिया के द्वारा भारतीय दर्शन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं । इनके संबंध में यह विचारणीय हैं कि यदापी इन्हें भाष्यकार कहा जाता हैं लेकिन इनकी कृतीयो मैं, विशेष रूप से शंकर कि रचनाओ को मौलिक और सृजनातम्क दृष्टिकोन से देखा जा सकता हैं कयों कि इन्होने प्राचीन दार्शनिक रचनाओ के आलोक में विशेष रूप से उनकी व्याख्या और विवेचन के आलोक में अपनी रचनायें प्रस्तुत कि हैं । लेकिन जैसा कि संकेत किया गया हैं, इनकी

रचनाओसे से हमें इनके मौलिक दृष्टीकोन का परिचय प्राप्त होता हैं । यहाँ यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नही होगा कि यद्यपि अद्वैत कि परंपरा ब्रह्म-सूत्र पर आधारित बतलाई जाती हैं, लेकिन शंकर के मौलिक और विशिष्ट योगदान का भी दार्शनिक दृष्टिकोन से कम महत्त्व नहीं हैं । शंकर के संबंध में विश्वकोश[1] मे भी उनकी महत्ता पर प्रकाश डाला गया हैं । इस प्रकार इन भाष्यकारो और विद्वानो कि संबंध में डॉ . राधाकृष्णन और प्रो. चार्ल्स ए. मूर ने ठीक ही माना हैं कि वस्तुतः यह युग अभी भी चल रहा है , क्योंकी अभी भी बहुत सारे विद्वान और विचारक प्राचीन दार्शनिक मतो कि व्याख्या और पुनर्व्याख्या अपने से कर रहै हैं । इस क्रम मे एक कदम आगे बढकर व्याख्या के बदले स्वयं जीकर दिखानेवाले क्रांतिकारक आधुनिक दार्शनिक में महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और बाल गंगाधर तिलक का नाम स्वाभाविक लिया जा सकता हैं, क्योंकी इन तींनो दर्शन शास्त्रियोंने भी अपरिप्रेक्ष्य मे वेदांत के नैतिक दर्शन को प्रस्तुत एवं प्रतिपादित करने का प्रयास किया हैं । समकालीन भारतीय चिंतन में यो तो विभिन्न चिंतन दृष्ठीगत होते हैं । कहा भी जाता हैं कि भारत में दर्शन अपने सर्वांगीण और सर्वतोमुखी विकास के लिये प्रसिद्ध हैं । लेकिन उल्लेख करना उचित होगा कि यद्यपि भारतीय दर्शन के इतिहास में भौतिकवाद, यथार्थवाद, अनेकवाद, द्वैतवाद, ईश्वरवाद आदी विचारधारायें दृष्टीगत होती हैं लेकिन यह तो मानना हि पडेगा कि प्रत्ययवाद या विज्ञानवाद भारतीय दर्शन कि विशिष्ट विशेषता हैं । इस बिंदू को स्पष्ट करणे के लिए डॉ. राधाकृष्णन और चार्ल्स ए. मूर ने अंतर निरीक्षणवादी दृष्टोकोन का उल्लेख किया हैं । वो तो दार्शनिक अध्ययन कि वस्तुनिष्ठ विधी भी होती हैं। लेकिन भारत में ऐसा देखा जाता हैं अधिकांश दार्शनिक अंतरनिरीक्षण विधी को हि प्रधानता देते हैं । इस संबंध में आत्मानामविधी भारतीय दार्शनिकोंका मूल-मंत्र प्रतित होता हैं । आत्म-चिंतनका वस्तुतः इस प्रकार भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान हैं । इस दृष्टिकोन के फलस्वरुप अधिकांश भारतीय दर्शनोंमे विज्ञानवाद या प्रत्यावाद का विकास होता हैं । अत: ऐसा माना जाता हैं कि विज्ञानवाद या प्रत्ययवाद भारतीय दर्शन कि विशेष उल्लेखनीय विशेषतः हैं । इस संबंध यह भी द्रष्टव्य हैं कि यों तो विभिन्न प्रकार कि विज्ञानवादी विचारधाराये यहा देखने को मिलती हैं लेकिन भारतीय इतिहास के दर्शन में वेदांत और विशेष रूप से अद्वैत वेदांत कि अपनी विशिष्ट महत्ता हैं । इस प्रकार जहाँ तक महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद एवं बाल गंगाधर तिलक के संबंध में इस विशेषता कि बात का प्रश्न उठता हैं, यह देखा जा सकता हैं कि इन लोगो ने भी वेदांत को और विशेष रूप से अद्वैत वेदांत को आधुनिक विश्व मे सिद्ध किया हैं ।

समकालीन भारतीय चिंतन कि प्रमुख विशेषतः जो यहा उल्लेखनीय हैं वह हैं इसका नैतिक आशिर्वाद । भारत में दर्शन का उद्देश सामन्यतया जीवन मे परमपुरुषार्थ को प्राप्त करना है । समकालीन भारतीय दर्शन में नैतिक क्रियावाद प्रस्तुत किया गया हैं । लगभग सभी मनिषिंयो

का मूल्यवादी दृष्टिकोन रहा हैं । यहा परमतत्व को परमशुभ माना गया हैं । मूल्यत्रय कि अवधारना भारतीय चिंतन कि एक उल्लेखनीय अवधारणा हैं । इसीलिय सत्यम, शिवम, सुंदरम का विवेचन समकालीन भारतीय चिंतन में विशेष स्थान रखता हैं । इस संबंध में अधिक विस्तृत विवेचन करने के बदले यहा भारतीय दर्शन में नैतिक व्यवस्था संबंधी विचार कि ओर संक्षेप संकेत किया जा सकता हैं ।

भारतीय चिंतन में वेदिक काल से हि विश्व कि नैतिक वैवस्था में विश्वास किया गया हैं । वेदो में ऋत के नियम का उल्लेख देखा जा सकता हैं । इसके अनुसार विश्व कि सभी वस्तूए नियम के अनुसार गतिशील होती हैं । इस व्यवस्था और नियम का पालन ग्रह, नक्षत्र आदी सभी करते हैं । इस नियम को बाद में कर्म या अदृष्ट या अपूर्व के नामसे अन्य भारतीय दार्शनिक मतो में स्थान प्राप्त हैं । वस्तूता कर्म का नियम नैतिक के क्षेत्रमें कारणका नियम हैं । इसके अनुसार सभी कर्म का उसके अनुरूप फल या परिणाम होता हैं । अर्थात पुण्य का फल सुखद और पाप का फल दुःखद माना जात हैं । भारतीय नीतिशात्र में चार्वाक को छोडकर प्रायः सभी दार्शनिक मतो में इस प्रकारके नियम मे अपने ढंग से विश्वास किया गया हैं । इस संबंध में येह द्रष्टव हैं कि कर्म का नियम भाग्यवाद का समर्थन नही हैं, बल्की येह इच्छा स्वातंत्र्य का पक्षघर दिख पडता हैं । पुरुषार्थ संबंधी अवधारणा के साथ साथ अन्य नैतिक अवधारणाए भारतीय चिंतन में अपना स्थान रखती हैं । वस्तुतः यो तो भारतीय दर्शन में ज्ञान, सत्य, और तार्किक विवेचन कि भी उपेक्षा नही कि गयी हैं, लेकिन यह तो मानना पडेगा कि यहाँ नीतीशास्त्र को अपना विशिष्ट महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं। कहा भी जाता हैं तत्त्वमीमांसिय दृष्टिकोन से यद्यपि भारतीय दर्शन में विभिन्न प्रकार के मतमतांतर पाये जाते हैं, लेकिन नैतिकता के क्षेत्र में चार्वाक को छोडकर सबो मे मतैक्य ही प्रतीत होता हैं । इस दृष्टिकोन से भी महात्मा गांधी, स्वामी विबेकानंद एवं बाल गंगाधर तिलक के जीवन और दर्शन में नैतिक और अध्यात्मिक मूल्योंका विशिष्ठ स्थान देखा जा सकता हैं ।

पुनः समकालीन भारतीय चिंतन का समन्वयवादी दृष्टिकोन भी पाश्चात्त्य अनुप्रयुक्त नैतिक चेतना में काफी विशिष्ठ माना जाता हैं । इस प्रकार का समन्वयवादी और व्यापक दृष्टिकोन का पाश्चात्य दर्शन में नया पदार्पण हुआ है जब की भारतीय संस्कार में यह मूर्त हैं । वस्तुतः इन महान विचारको का दार्शनिक दृष्टिकोन प्राचीन परंपरा और पाश्चात्य अनुप्रयुक्त नैतिकता की मांग के अनुकूल प्रतीत होता हैं। यह ठीक हैं की इन महान दार्शनिकोके दर्शन पर प्राचीन भारतीय दर्शन विशेष रूप से वेदांत का प्रभाव हैं, लेकिन इसे केवल पुनरावृत्ती मानना इनके प्रति अन्याय करना होगा । सच्ची बात तो यह हैं की वर्तमान युग में हमारे अधिकांश समकालीन भारतीय दार्शनिकोने वेदांतसे प्रेरित होते हुए भी इसकी केवल पुनरावृत्ती नही की हैं, बल्की उनके विवेचन और व्याख्या में एक प्रकारसे प्रायोगिक, सृजनात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोन को देखा जा सकता हैं । यहाँ अधिक

विवेचन नहीं करके केवल इतनाही उल्लेख करना हमारे अध्ययन के दृष्टिकोन से पर्याप्त और प्रासंगिक होगा कि महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद एवं बाल गंगाधर तिलक आदी कई विद्वानों ने वेदांत कि नैतिक-सामाजिक चेतना को अधिक व्यावहारिक और व्यापक बनाने का ते ढंग से प्रयास किया हैं। इन लोगों ने अद्वैत वेदांत को पाश्चात्त्य चिंतन और विज्ञान परिप्रेक्ष्य में अधिक समन्वयवादी और यथार्थ वादी रूप में प्रस्तुत एवं प्रतिपादित किया हैं । इसलिये यह तो मानना हि चाहिये की इतके नैतिक विचारोंमे अपने ढंग की मौलिकता है जिसे अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के रूप में देखा जा सकता है।

इस तरह स्पष्ट रूप से यह बतलाया जा सकता है की समकालीन भारतीय चिंतको ने यद्यपि प्राचीन दार्शनिक कृतियोंके आलोक में हि भारतीय दर्शनको विकसित किया है, लेकिन उनके चिंतन में मौलिकता तथा वैश्विकता हैं । उनके दार्शनिक विवेचन में सृजनात्मक और मौलिक व्याख्या तथा पुनर्व्याख्या के तत्त्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है। कुछ उसी तरह की बात महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद एवं बाल गंगाधर तिलक जैसे आधुनिक विचारकोंके साथ चरौतार्थ होती हैं । कभी कभी आधुनिक युग के दार्शनिकोंके संबंध में यह दोषारोपण किया जाता है की उनके दर्शन मे केवल पुनरावृत्ती है क्योंकी उनमेसे अधिकांश विद्वानों ने प्राचीन भारतीय दर्शन के मुख्य बिंदूओंको ही प्रस्तुत एवं प्रतिपादित किया है। लेकिन उनके चिंतन में केवल पुनरावृत्ती देखना उनके प्रति अन्याय करना होगा। यह ठीक है कि स्वाभाविक रुपसे इन के दार्शनिक दृष्टिकोन में अतीत के प्रति आस्था और श्रद्धा का भाव दृष्टीगत होतो है लेकिन इस आधार पर उसे मात्र परंपरा वादी घोषित कर देना या उनमे केवल पुनरावृत्ती देखना उचित नहीं हैं क्योंकी उनमे सृजनात्मक एवं समिक्षात्मक विवेचन स्पष्ट तया पाया जाता है। प्रोफे. नागराजा राव[4] ने भी स्पष्ट तया इस संबंध में समकालीन भारतीय चिंतन में सृजनात्मकता और मौलिक ता के तत्त्व को देखा है।

निष्कर्ष: इस प्रकार निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है की समकालीन भारतीय दर्शन केवल प्राचीन भारतीय दर्शन की पुनरावृत्ती तथा पाश्चात्त्य दर्शन की अनुकृती मात्र नाही है। कभी कभी आधुनिक युग के दार्शनिकोंके संबंध में यह दोषारोपण किया जाता है की उनके दर्शन में केवल पुनरावृत्ती है क्योंकी उनमे से अधिकांश विद्वानोंने प्राचीन भारतीय दर्शन के मुख्य बिंदूओंको ही प्रस्तुत एवं प्रतिपादित किया है । लेकिन इस संबंध में यह स्पष्ट है की यद्यपि इनके दार्शनिक दृष्टिकोन में अतीत के प्रति आस्था और पाश्चात्य दार्शनिक शैली के प्रती श्रद्धा का भाव दृष्टीगत होता हैं परंतु इसका यह अर्थ नही हैं कि उनमे मौलिक सृजनशिलता का अभाव हैं। समकालीन भारतीय चिंतको ने यद्यपि प्राचीन भारतीय चिंतन से प्रेरणा प्राप्त किया हैं, लेकिन इसके साथ-साथ इन्होने आधुनिक संदर्भ में एक नवीन वैश्विक जीवन-दृष्टी तथा उत्कृष्ट नीतिशास्त्रीय समाधान प्रस्तुत किया हैं जिसका विशिष्ट दार्शनिक महत्व हैं ।

सन्दर्भ–सूची:

1. “No name is better known in the history of bhramanik philosophy than that of sankaracharya ,and no doctrine has exercised greater influence than his on hindu thought in genrel. Traces of its

influence are unmistakable even at present, notwithstanding the existence of a number of rival system of hindu philosophy whose main if not sole object was and has been to controvert his doctrine with all this, it is surprising that every little that is of historical importance is known about he life of this great philosopher and the age in which he lived."

-Encyclopedia of religion and Ethics, edited by James Hastings, Vol.XI,T Clark,38 George Street,New York, Charlie Scribner's Sons, 597,fifth Avenue, p.185.

2. "While, in a sense , the Scholastic period is still in progress, since interpretations of ancient ideas and system are still being written……"

-Radhakrishanan,DrS.and Moore,C.A.;Op.,p.

XXI.

3. This introspective interest is highly conductive to idealism of course,and consequently most Indian Philosophy, especially Hinduism, has been in the direction of monistic idealism. Almost all indian philosophy believes that reality is ultimately one and ultimately spiritual."

-Radhakrishanan, Dr.S., and Moore, C.A.:"A Source Book in indian Philosophy", Princeton,New Jersey Princeton university press 1975,p.XXV

4. "it is unfair and not correct to describe the contribution of the contemporary Indian thinkers e.g. Gandhiji, Tagore, Ramkrishna, Vivekanand, Aurobindo, Vinobaji and Radhakrishanan , as merely a relish of the old Vedanta making no advance on traditional thought in truth, most of these thinkers have been influenced by modern thought and science and their contribution marks the age of "creative interpretation" and is in no small sense as renaissance in Indian Philosophy."

5. Rao, P. Nagraja: Contemporary Indian philosophy' Bhartiya Vidya Bhavan, Chawpati, Bombay, 1970, p.2